ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 302-306
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

व्यापार का धर्म

प्रो0 राम कृष्ण उपाध्याय
निदेशक– पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया,
सह अध्यक्ष– अर्थशास्त्र विभाग, कुँवर सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received-13.09.2022, Revised-18.09.2022, Accepted-24.09.2022 E-mail: dr.ramkrishna1975@gmail.com

सारांश:– विश्व पटल पर व्यापार एक अहम् कार्य है जिसकी धुरी पर आर्थिक प्रगति टिकी है। व्यापार के अनेकों तरीके हैं, जिसे समाज तय करता है। यह लेख भारत के परिपेक्ष्य से है । इसके अंतर्गत भारतीय समाज के विभिन्न समयों में प्रतिपादित व्यापार के नियमों का चर्चा किया गया है। इसमें अन्तराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे विभिन्न अच्छे कार्यों का भी उल्लेख किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– व्यापार धर्म, कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी, उद्यमिता, स्वत्व, मददगार, शोषण विहीन, कल्याण युक्त।

व्यापार एक ऐसा शब्द है जो दो अथवा दो से अधिक व्यक्ति, संस्था, प्रदेशों अथवा देशों के बीच लेन–देन को कहते हैं। यह लेन–देन आवश्यकतानुसार प्रारम्भ होकर जरूरतों में बदल जाता है। जब एक–दूसरे की परस्पर जरूरतें उनके हितों का ध्यान देते हुए होती हैं तो वे लेन–देन दोनों को सबल, सशक्त, समृद्ध और संपन्न बनाने में मददगार होती हैं। जब व्यापार शोषण विहीन और कल्याण युक्त होता हैं तो वही उस व्यापार का धर्म बन जाता है।

अपनी परंपरा में छोटी–छोटी कहानियों से जीवन के बड़े–बड़े सबक हमारे यहाँ सबके मन में बिठाये जाते रहे हैं। ऐसी मान्यता है कि हिरन्यकश्यप नामक राक्षस का पुत्र प्रह्लाद था। वह बड़ा भक्त था स उसकी भक्ति और उसको समाप्त करने के अनेक प्रयास राक्षसों ने किये, परन्तु वे असफल रहे। अंततोगत्वा भगवान् ने नरसिंह अवतार धारण कर हिरण्यकश्यप का वध किया और प्रह्लाद को ही राजा बना दिया। इस पर राजा इन्द्र जो उसका राज्य लेना चाहते थे, अत्यंत निराश हुए और अपने गुरु के पास उपाय पूछने गए। गुरु ने बताया कि युद्ध द्वारा प्रह्लाद को नहीं जीत पायेंगे। प्रह्लाद महादानी है, तुम याचक बनकर उसके पास जाओ और उससे उसका राज्य नहीं उसका स्वत्व मांगना। इंद्र ने वैसा ही किया। प्रह्लाद ने स्वत्व देने का वचन दे दिया और उसका स्वत्व एक पुरुष की छाया के रूप में इंद्र में प्रवेश कर गया। उसके बाद एक पुरुषाकृति प्रह्लाद के शरीर से निकल कर पुनः इंद्र के शरीर में प्रवेश कर गया, इसके जाने पर प्रह्लाद ने पूछा आप कौन हैं ? उसने कहा मैं बल हूँ, मैं तो स्वत्व में ही रहता हूँ, स्वत्व जब इंद्र के पास चला गया तो मैं कैसे आपके पास रहूँगा। इसके बाद पुनः प्रकाशमान आ. ति प्रह्लाद के शरीर से निकला और इंद्र के शरीर में चला गया, प्रह्लाद ने पूछा आप कौन ? उसने बताया मैं तेज हूँ जब स्वत्व और बल चला गया तो मैं तो उन्हीं के साथ रहता हूँ इसलिए मैं भी जा रहा हूँ। इसके बाद एक चमचमाती चपलावत महिला की छाया.ति प्रह्लाद के शरीर से निकली, तो प्रह्लाद ने पूछा, माता आप कौन ? तो उसने बताया, मैं लक्ष्मी हूँ, मैं वहीँ रहती हूँ जहाँ स्वत्व, बल और तेज रहते हैं। इसलिए मैं भी जा रही हूँ। एक स्वत्व छोड़ देने से सब कुछ चला गया।

राष्ट्रकवि मैथिलि शरण गुप्त जी कहते हैं– हम क्या थे ? क्या हैं ? और क्या होंगे ? अगर ऐसे हुए तो क्यों हुए ? इतिहास गवाह है कि लगभग १२०० वर्षों से हम लड़ते आ रहे हैं, इसमें धन और जन दोनों की अपार क्षति हुई। ५००–७०० वर्षों तक इस्लाम आक्रान्ताओं के कुशासन के बावजूद अंगस मेडिसन की पुस्तक The Millenium Perspective बताता है कि दुनिया के GDP में भारत का हिस्सा लगभग ३०% था। परन्तु अंग्रेजों ने जो लगभग २०० वर्षों तक शासन किये और हमारे स्वत्व को ही नष्ट कर दिए। हम क्या हैं ? हम किस प्रकृति पर खड़े हैं ? हमारी संस्कृति क्या है ? हमारा स्वत्व क्या है, हम लोग जानते नहीं, और जानते भी हैं तो विदेशी ग्रंथों को पढ़ कर। हम अपने ग्रंथों को नहीं पढ़ते। हम उनकी बुद्धि से सब मूल्यांकित करते हैं। आज भी भारत पीछे नहीं है, भारतीय ग्रंथों और दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाय तो भारत आज भी दुनिया का सर्वप्रथम देश है। यह तो दिखता भी है कि दुनिया में डॉक्टर चाहिए तो भारत का, वैज्ञानिक, अभियंता या आचार्य चाहिए तो भारत का। नासा के हर चार–पांच वैज्ञानिकों में एक भारतीय है।

एक बार दुबई में एक समिट हुई जिसमें सभी दुनिया से लोग बुलाये गए थे। तो अरब देशों के व्यापारियों ने भारतीय प्रतिनिधि मंडल से समिट के बाद 15–20 मिनट का समय अलग से मिलने के लिए माँगा, और बताया कि अन्य देशों के लोग तो हमें निचोड़ने के लिए करार करने आए हैं, वो जैसा करेंगे तदनुसार हम भी अपने दावं पेंच खेलेंगे। यह चलता रहता है और इसमें हमें बहुत लाभ नहीं मिलेगा। भारत पर हमें भरोसा है, आप करेंगे तो ईमानदारी से करेंगे। आपसे करार करके हम आश्वस्त भी रहते हैं और इस बात से निश्चित भी रहते हैं कि आप उल्टा–सीधा नहीं करेंगे। शेष दुनिया की आश्वस्ति और विश्वास ही हमें सबसे अमीर देश बनाती है। दुनिया, अमीरी की परिभाषा– 'किसके पास कितना धन है इससे लगाती है'– परन्तु हमारी अमीरी की परिभासा इससे अलग है कि – 'कितना धन आपने बाटा ।' हमें यह विचार छोड़ना होगा कि हम समर्थ

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

नहीं है, यह कहना बंद करना होगा। अपितु हमें अपने स्वत्व को जागृत करना होगा कि हम ही समर्थ हैं, क्योंकि कभी दुनिया के सारे अनुसंधान, व्यापार, शास्त्र हमी ने चलाये थे, हम दुनिया के सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं, दुनिया का संचालन मैं करूँगा। हमारी कल्पना है– 'तेरी आत्मा में स्वयं भगवान् है, मनुष्य तो महान है।' मनुष्य के लिए कहा गया है –

"तू जो चाहे पर्वत, पहाड़ो को तोड़ दे।
तो जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे,
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे ।।"

वर्तमान परिवेश जो बदलता नजर आ रहा है उसमें भगवान् की इच्छा है कि भारत भूमि इस परिवर्तन का नेतृत्व करे। हम सभी को करना होगा, सारी दुनिया का पैराडाइम ही बदलना पड़ेगा। राष्ट्रवाद का जो व्यवहार नीति के साथ प्रश्न आता है, वो है व्यापार। देश का व्यापार, देश के हित के साथ जुड़ा होना चाहिए। उसकी अनदेखी कोई नहीं कर सकता। स्वयं चाणक्य ने कहा है–

सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलं अर्थः, अर्थस्य मूलं राज्यं ।

यहाँ अंग्रेजी के रिलिजन, उर्दू के मजहब, पंथ, सम्प्रदाय, वाद और धर्म में अंतर समझने की जरुरत है।

धर्मम चर सत्यम वद।

अर्थात धर्म पर वही चल सकता है जो सनातन सत्य वचन पर दृढ रहेगा। धर्म उसी को कहेंगे 'धारयति इति धर्मः' जो सबके कल्याण का रास्ता दिखलाए, जबकि पंथ, रिलिजन, सम्प्रदाय, मजहब, विशेष पुस्तक अथवा विचार विशेष को मानने वालों के समुदाय को इंगित करता है। धर्म सबसे सम्बंधित है, मानव से ही नहीं सृष्टि से भी। यह व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्टि सबको जोड़कर चलाता है। सबके समन्वय से उन्नति का राह दिखाता है। यह दर्शन मात्र धर्मप्राण देश भारत के पास है क्योंकि वही हमारा स्वत्व है। विवेकानंद ने कहा था कि जब तक भारत में धर्म लेश मात्र भी है, तब तक दुनिया में किसी की ताकत नहीं कि वो भारत को मिटा दे। लेकिन दुर्भाग्य से यदि भारत से धर्म का संपूर्ण लोप हो गया, तो भारत को दुनिया की कोई ताकत बचा नहीं सकती है।

पूर्व काल में विदेशी आक्रमण शुरू होने से पहले ज्ञान–विज्ञान का सर्वोतम विकास भारत से सर्वत्र गया, और अपने देश में खेती का प्रमाण जो 8000 वर्षों से भी अधिक पुराना है पाया जाता रहा, परन्तु खेती से जमीन खराब नहीं हुई, पर्यावरण प्रदूषित नहीं हुआ, अन्न विषाक्त नहीं हुए, क्योंकि उस समय प्रकृति का दोहन जरुरत भर ही होती रही, लालच से नहीं। जबकि यूरोपीय लोग जिन्होंने अफ्रीका आदि में जाकर जमीन कब्जा किये और उन्होंने मात्र लगभग ४०० वर्षों की खेती की और जमीन बंजर हो गए, खेती–वनस्पति खराब हो गयी, अन्न और जल विषाक्त हो गए, ऐसा उनकी शोषण नीति और अधिकतम लालच को पूर्ण कर यूरोप को धनाढ्य बनाने की कुदृष्टि के कारण हुआ। भारतीय तकनीक पूर्व में कितना विकषित रहा कि ढाका का मलमल आज भी प्रसिध्द है, ग्राम क्षेत्रों में भी स्थानीय कच्चे मालों से जो फौलाद–स्टेनलेस स्टील बना दिया जाता रहा वह वर्तमान उच्च तकनीक भी नहीं बना पा रहे हैं।

जबसे हमने अपने स्वत्व को छोड़ दिया, हम गिरते चले गए। स्वत्व का मान वर्तमान में जग रहा है। ये उमंग नई पीढ़ी में तो है ही, सर्वत्र और सभी क्षेत्रों में हो रहा है। इन भावनाओं को व्यवस्थित कर सही दिशा दे, उन्हें प्रोत्साहित करने का कार्य हमें करना होगा। यह सत्य है कि मनुष्य धर्म का आचरण तब करता है जब वह स्वयं स्वावलंबी और सुखानुभूति कर रहा हो।

"भूखे भजन न होई गोपाला, यह ले अपनी कंठी माला"। विवेकानंद ने भी कहा है, "अरे भाई अपना अध्यात्म वगैरह बाद में बताओ, पहले उसके पेट में अन्न डालो"। पहले पेट की भूख खत्म (दरिद्रता दूर) करो तब दिमाग में ज्ञान दो। जब जीवन सुखपूर्ण रहता है तभी अध्यात्म फलता–फूलता है। जब हमारा अध्यात्म उत्कर्ष पर था तो भारत की सुजला, सुफला, मलयज, शीतल भूमि खंडित नहीं थी। अफगानिस्तान के पश्चिम से वर्मा के पूरब तक और तिब्बत के चीन की तरफ एलान से श्री लंका के दक्षिण तक भारत भारत अखंड था। सारे देश में खाने–पीने की दिक्कत न थी। कोई बाहर से आता था तो उसे भी सम्मान पूर्वक खाने–रहने की छुट थी, क्योंकि अपनी संस्ति में विविधता अलगता नहीं अपितु विशिष्टता मानी जाती रही है। ये अपना बुनियादी प्रतिमान रहा है।

हम देख रहे हैं कि भारत के प्रधानमंत्री विदेशों में जाकर पूर्ण आत्म विश्वास के साथ "वशुधैव कुटुम्बकम" - One Sun, One World One Family द्वारा सारी दुनिया, सारा अस्तित्व, एक सत्य का विविध रूप में आविष्कार है, का व्यापक रूप से प्रचार–प्रसार कर रहे हैं और सारी दुनिया उसे ध्यान से सुन रही हैं और कुछ अपवाद को छोड़कर सारी दुनिया मान भी रही है । माननीय प्रधानमंत्री ने विश्व के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए अन्तराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून), इंटरनेशनल मिलेट्स

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

इयर 2023 का आह्वान किया जिसे UNO के नेतृत्व में संपूर्ण दुनिया ने स्वीकार किया स 2023 के 21 जून को तो प्रधानमंत्री ने UN Office, New York जाकर स्वयं नेतृत्व किया ।

अभी जो पैराडाइम है वह है Struggle for the existence, Survival of the fittest and Fragmentary Approach जो समाज, राष्ट्र और दुनिया को खंडित करने वाला है । इसमें सर्वाइवल के लिए फिटेस्ट ही जीतेगा और रहेगा, तो पहले बली बनो और बली बने रहने के लिए सारी दुनिया का (दुरूपयोग) उपयोग करो स जो तुम्हारे काम के हैं वो तुम्हारे हैं, जो तुम्हारे काम के नहीं हैं उन्हें तरजीह देना है या नहीं ये बली बन कर तुम तय करोगे स उनके उपभोग और उपयोग कर सकते हो तो उन्हें रखो अन्यथा छोड़ दो। परन्तु भारतीय दृष्टि बताता है कि व्यक्ति का सृष्टि से नाता है। सभी चर–चराचर से हमारा रिश्ता है और इसलिए पूरी दुनिया एक कुटुंब है। पूरा विश्व एक कुटुंब है। यही सत्य है और इसे व्यवहार में लाना चाहिए।

लोगों को जीवन में अगर वैभव सम्पन्न बनना है तो पैसा कमाना है। इसके लिए व्यापार करना होगा। कहा गया है कि व्यापार केवल आजीविका नहीं है, केवल समृद्धि के लिए नहीं है। व्यापार हमारा धर्म है अर्थात व्यापार मात्र कमाने के लिए नहीं अपितु आपस में जोड़ने के लिए करना है, सबके समृद्धि के लिए करना है, सबके विकास के लिए करना है। सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट में व्यापारी यश प्राप्त करने के लिए कुछ भी करता है और Every thing is fair in war and love मानता है । परन्तु भारतीय सोच है। Fair is fair and unfair is unfair- नीति से चलना ही होगा, धर्म से ही चलना होगा स जो जैसा करेगा, वो वैसा भरेगा स तुलसी बाबा ने लिखा है, "जो जस करही तो तस फल चाखा"।

आज CSR (Corporate Social Responsibilities) की बात होने लगी है। ये CSR शब्द हमारे यहाँ का नहीं है; हमारे यहाँ तो कोई दरवाजे पर आता था तो कुछ न कुछ बच्चों के हाथों देकर विदा कराने की रही है, क्योंकि घर में जो है वो केवल मेरे लिए नहीं, जो जरूरतमंद आया उन सभी के लिए है, क्योंकि यह मेरी परंपरा में रहा है, जो अपना धर्म रहा है, और धर्म है इसलिए तो कर्त्तव्य भी है। धर्म का अर्थ स्वभाव भी होता है। तो मेरा कर्त्तव्य भी है। जतन से और कुशलतापूर्वक दोनों हाथों से अधिक से अधिक धन कमाना और उसे सौ हाथों से बांटना। दान करना अपने समाज की परंपरा रही है। भामाशाह ने तो सब कुछ महाराणा प्रताप को दे दिया। व्यापारी, व्यापार क्यों करता है ? उसका धर्म है कि अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए वह व्यापार खड़ा करे। उसका भाव है कि मेरा देश विश्व के लिए जीता है। जब हमारा व्यापार समृद्ध होगा, तो भारत का व्यापार समृध्द होगा, तो विश्व का व्यापार समृद्ध होगा। इस व्यापार से केवल मेरा पेट नहीं भरेगा, सबका पेट भरेगा। इसलिए मेरा व्यापार चलेगा और उससे रोजगार बढेगा। व्यापार के लाभ हेतु पर्यावरण को नहीं बिगाड़ेंगे, कम से कम उर्जा खाने वाले तरीके ढूंढेंगे। व्यापार से सम्बंधित जितने लोग होंगे, जब उन्हें कुटुम्ब मानेंगे तभी इससे प्रगति होगी।

पुस्तक "द इनक्रेडिबल जापानीज" बताता है कि किस प्रकार जापान दुनिया के बाजारों का राजा बना। उसके पांच प्रमुख कारण बताये गए जिनमें से कोई भी कारण अर्थशास्त्र से सम्बंधित नहीं है –

1. जापानी लोग देशभक्त हैं।
2. जापानी पुरे उद्योग में सबको परिवार मानकर चलते हैं।
3. जापान के आर्थिक विकास के लिए किसी भी प्रकार का साहस करने को तैयार रहते हैं।
4. देश की प्रगति के लिए किसी भी प्रकार का रिस्क लेते हैं।
5. जापान का आदमी 'सुन्य त्रुटी सिद्धांत' पर उद्योग करता है।

भारत में भी विकास/उन्नति के लिए जो छः बातें कही गयी हैं उनमें कोई भी अर्थशास्त्र से सम्बंधित नहीं है।

1. उद्यमिता (Entrepreneurship)
2. साहस (Courage)
3. धैर्य (Patience)
4. बुद्धि (Intelligence)
5. शक्ति (Power)
6. पराक्रम (Stoutness)

ये छः गुण जिनके पास हैं उनका साथ भाग्य भी देता है कहा गया है– 'हिम्मते मर्दा, मददे खुदा', हिम्मत/साहस करने वालों का भगवान् भी साथ देते हैं । सफलता पाने की इच्छा रखने वालों को निम्नांकित छः दोषों से दूर रहने की भी सलाह दी गयी है –

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्ति पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र दैवं सहायकृत।।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

अर्थात् – उद्यम (जोखिम लेने वाला व्यक्ति), साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम– यह छः गुण जिस व्यक्ति के पास होते हैं, भगवान् भी उसकी मदद करते हैं।

षड दोषाः पुरुषेणह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

अर्थात ऐश्वर्य या उन्नति चाहने वाले पुरुषों को नींद, तन्द्रा (ऊंघना), डर, क्रोध, आलस्य तथा दीर्घसूत्रता (जल्दी हो जाने वाले कामों में अधिक समय लगाने की आदत) इन छः दुर्गुणों को त्याग देना चाहिए।

मानं हित्वा प्रियो भवति, क्रोधं हित्वा न सोचति ।।
कामं हित्वा अर्थवान भवति, लोभं हित्वा सुखी भवेत् ।।

अहंकार को त्याग कर मनुष्य प्रिय होता है, क्रोध किसी का हित नहीं सोचती। कामेच्छा को त्यागकर व्यक्ति धनवान होता है तथा लोभ को त्याग कर व्यक्ति सुखी होता है।

हमें स्वतंत्रता तो मिली और हम आगे जाने को इच्छुक भी हैं, हमारा पराक्रम भी जागा है, निद्रा टूटी है, आजादी के लिए कामेच्छा भी खत्म हो गयी है, विदेशी कोड़ों और दण्ड का भय भी खत्म हो गया है परन्तु अति आवेश के बावजूद तन्द्रा और आलस्य घेरे हुए है। जिस कारण विकास का पथ सही रतार नहीं ले पा रही है। यह सब उस आदर्श का प्रभाव है जिसे मुगलों और अंग्रजों ने हमारे मनमस्तिष्क पर छोड़ रखा है। अभी भी हम अपने स्वत्व को वापस नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं, हम उसे भूल सा गए हैं। उन्होंने दुनिया को देखने की मेरी मानसिकता इस कदर बदल दिया है कि हमें सहसा अपने पराक्रम का याद ही नहीं आ रही है। हमें अपने गौरव को याद करना होगा और बताना होगा कि वो मेरे ही पूर्वज रहे जिन्होंने शून्य से लेकर अंकों का अविष्कार किया था, हम उन्हीं की संतान हैं।

एक कथानक याद आ रहा है– एक जंगल में एक बार शेरों का बच्चा भूल कर भेडियों के बीच चला गया और वहीँ रहने लगा था, तो उसका स्वभाव भी भेडियों की तरह बनता गया। कुछ वर्षों में जब वह बड़ा हुआ तो भी रहता तो भेडियों के साथ था, तो जब किसी खतरनाक जानवर के आने पर भेड़िया भागते थे तो वो भी उनके साथ भागता था। एक बार एक शेर के आने पर जब भेडिया भागने लगे तो शेर ने देखा कि इसमें मेरे जाति का भी एक भाग रहा है तो दौड़ाकर शेर के भागते बच्चे को पकड़ा और कुएं के पास ले जाकर उसमें अपने चेहरे से उसके चेहरे और आवाज को मिलवाया और महसूस कराया कि तू शेर है तेरे पूर्वजों और तेरी जाति का ही शासन इस जंगल में चलता रहा है, तुझे इसके लिए ही भगवान् ने बनाया है। उसके उसके स्वत्व का एहसास कराया और तब से गीदड़ों के बीच रहने वाला वह शेर का बच्चा शेरों के राज परिवार का अंग बन गया।

भारतीयों में भी उसी स्वत्व का एहसास कराना है कि वो दुनिया को ज्ञान और ध्यान देने वाले हैं। उन्होंने दुनिया की जरूरतों को समय–समय पर पूर्ण किया है। इसलिए यह विश्वगुरु, सोने की चिड़िया, दूध–दही का देश कहा जाता रहा है। आज का वातावरण भी बदल रहा है, भारत की तन्द्रा टूटी है। दीर्घसूत्रता को भारतीय नवजवान वैज्ञानिकों, आध्यात्मिक पुरोधाओं और साहसी उद्यमियों ने पैराडाइम को परिवर्तित किया है। दुनिया भारत के नजदीक आ रहा है।

देशों के बीच सम्बन्ध– सौहाद्र बढ़ेंगे तो देशों के बीच व्यापार भी बढेगा, कुछ जाएगा तो कुछ आएगा। लक्ष्य है– संपूर्ण विश्व एक परिवार बना रहे। सारा विश्व एक घर जैसा बन जाए– 'विश्वं भवति एकं नीडम्'। हम जहाँ भी गए ज्ञान बांटे, सभ्यता और संस्ति का प्रसार किये। लोगों का जीवन पहले से बेहतर बनाने का सन्देश दे सहयोग किया, उनकी संस्ति को नहीं मिटाया, उनके देश को नहीं लूटा, उन पर शासन नहीं किया। जहाँ भी भारतीय गए कुछ न कुछ देकर आए। इसलिए चाहे राम हों, कृष्ण हों, विवेकानंद हों या गाँधी हो सभी ने भारतीय ध्वज पताका की संस्कृति–संस्कार का प्रचार–प्रसार किया। इसलिए भारतीय गुरुओं, पराक्रमियों, ऋषियों, तपस्वियों के प्रति बाहर आदर और सम्मान का भाव है।

एक बार एक मित्र चीन गए थे वहाँ शिंटो मंदिर में गए। वहाँ पहले से एक महिला पूजा कर रही थी, जब वह पूजा करके पीछे मुड़ी तो पूछा आप कहाँ से आए हो ? बताया भारत से तो उसने झुककर प्रणाम किया। मित्र ने कहा आप तो मुझसे बड़ी हैं। महिला ने जवाब दिया कि बात छोटे–बड़े की नहीं है, आप जिस बड़े देश से आए हो उस देश ने हमको मनुष्य जीवन सिखाया है, इसलिए आप प्रणम्य हो। इसलिए हमें समझना होगा कि जब भारत वैभव सम्पन्न होगा तभी संपूर्ण विश्व में समृद्धि आएगी। इसलिए हमें स्वयं तथा विश्व को समृद्ध करने के लिए व्यापार करना आवश्यक है। परन्तु यह व्यापार पेशेवर नहीं अपितु धर्म के नाते करना चाहिए । हमारे सभी उत्पाद व्यवहार जीरो एरर एप्रोच से होना चाहिए। व्यापार के साथ–साथ ज्ञान की मर्यादाओं को विवेकानुसार उत्कृष्टता के साथ सारी दुनिया का नेतृत्व करना होगा । हम आगे बढ़ेंगे और सारी दुनिया को भी आगे बढ़ाएंगे। कृषि, उद्योग और व्यापार सब अंतर–सम्बंधित है। सबका समग्रता के साथ विचार करना चाहिए। कृषि की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

उन्नति से उद्योग बढ़ेंगे, उद्योग से उत्पादन, रोजगार, आय, मांग सब बढ़ेंगे तो व्यापार भी बढेगा और जैसे–जैसे व्यापार बढेगा, उत्पादन, रोजगार, आय, मांग सबमे त्वरित और बहुगुणित वृद्धि होगी, समृद्धि के साथ विकास का पथ प्रशस्त होगा। हमें "द इनक्रेडिबल जापानीज" के पांच सूत्रों का ध्यान देना होगा, नैतिक व्यापार को स्थान देना होगा, तब जाकर सारी दुनिया को एक नई दिशा देने वाला प्राचीन काल का गौरवपूर्ण भारत और भी निखर पर पूर्व से भी अधिक गौरवपूर्ण और वैभव सम्पन्न भारत बन सकेगा । भारत के व्यापारी का मिशन, .षक और उद्यमी आदि का मिशन ऐसा नेशनल मिशन होना चाहिए जिससे कि संपूर्ण दुनिया को उसका खोया हुआ संतुलन वापस प्राप्त करा देने वाला धर्म बन जाए। ये मिशन अपने देश के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का मिशन हो जाए, हमारे व्यापारियों का भी ये मिशन हो और उस मिशन के तहत वो व्यापार हो तो वो फिर व्यापार–धर्म बन जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एन, च. ड. तीसरी दुनिया का तीसरा रास्ता, वाराणसी : आनंद कानन प्रेस।
2. करमचंद, ग. म. मेरे सपनो का भारत, वाराणसी : सर्व सेवा संघ।
3. करमचंद, ग. म. संछिप्त आत्मकथा, वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन।
4. चंद्रशेखर, ध. गाँधी विचार और पर्यावरण, वाराणसी : सर्व सेवा संघ।
5. दत्तोपंत, ठ. पश्चिमीकरण के बिना आधुनिकीकरण. नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन।
6. दीनदयाल, उ. भारतीय अर्थनीति, लखनऊ : लोकहित प्रकाशन।
7. पी., म. ज. भारतीय अर्थव्यवस्था, आगरा : साहित्य भवन।
8. विवेकानंद, स. हिन्दू धर्म, नागपुर : रामकृष्ण मठ।
9. सप्रे, म. भ. पंचामृत, अहमदाबाद : पुनरुथान प्रकाशन सेवा ट्रस्ट।
10. सुन्दरम, द. औ. भारतीय अर्थव्यवस्था।

*****